पाठ 8. बोलो बच्चो

पाठ का परिचय

बच्चो, यदि अपने घर में रुपयों का पेड़ उग आता, यदि पेट्रोल की नदी बहने लगती तो तुम क्या करते? ऐसी बातें जो केवल तुम्हारी सोच में हैं यदि साकार रूप ले लेतीं तो? मोटरकार यदि पेड़ पर उगती, अपने आप ही स्वादिष्ट और मनपसंद खाना उग आता और फूँक मारने से ही हवाई जहाज़ चलाने में हम सफल हो जाते तो, जल्दी से बताओ, हम सभी क्या करते? किताबें न पढ़नी पड़तीं और परीक्षा भी नहीं होती, दिनभर खेलने-कूदने को मिलता और कोई डाँटने वाला न होता तो ..... ऐसे में हम सभी बच्चे नाच-नाचकर हँसते और घूमते। खूब मज़े उड़ाते और मस्ती करते। बचपन का आनंद ही दोगुना हो जाता।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

कल्पनाएँ मुरझाए हुए मन को प्रसन्नता से भर देती हैं। यह कविता मनोरंजन के लिए है। मनोरंजन से जीवन में नवीनता आती है। जीने का आनंद बढ़ जाता है। सपने बच्चों के जीवन का एक ऐसा हिस्सा हैं, जो उनके जीवन को खुशियों से भर देते हैं।

पाठ का वाचन

धीमी गति से लय और तान के साथ दो या तीन बार कविता बोलें या गाएँ। बच्चे आपके पीछे-पीछे कविता की दो-दो पंक्तियाँ लय व तान के साथ बोलें। अब बच्चे पुस्तकें खोलकर कविता पाठ करें। बच्चों का ध्यान तुक की ओर दिलाएँ – निकलती - उगती, जब - सब, करते - फिरते।

बच्चों को बताएँ कि यहाँ हर दूसरी पंक्ति मिलती-जुलती आवाज़ वाले शब्दों पर समाप्त होती है। इससे कविता की लय बनती है, इसी को 'तुक' कहते हैं। इससे कविता याद करने में आसानी होती है।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से उनके स्वप्नों के बारे में जानें। उनसे अपनी कल्पनाओं को कक्षा में सुनाने को कहें। बच्चों से पूछें –

- यदि स्कूल न होता तो वे कैसा अनुभव करते?
- यदि चॉकलेट के पेड़ होते तो वे क्या करते?
- उनका मनपसंद कार्टून यदि उनके सामने आ खड़ा होता तो?
- उनकी मुलाकात 'सुपरमैन' से हो जाती तो?

ऐसे अनेक प्रश्नों के माध्यम से बच्चों की कल्पनाओं को जानें और उनपर चर्चा करें।